विषयानुक्रम

पृष्ठ

प्रथम अध्याय 1 - 24

प्रस्तावना (काव्यमीमांसा की महत्ता) **आचार्य राजशेखर का व्यक्तित्व और कृतित्व :-** काल (अन्त:साक्ष्यों तथा बहि:साक्ष्यों का आधार), जन्मस्थान एवं वंश, कुल परम्परा, व्यक्तित्व, विदुषी पत्नी, कर्मभूमि-कन्नौज, रचनाएँ।

द्वितीय अध्याय 25-63

काव्यमीमांसा के विविध रोचक प्रसङ्ग

(क) आचार्य राजशेखर का काव्य पुरूष

(ख) काव्य एवम् साहित्य

(ग) रीति, वृत्ति एवं प्रवृत्ति

(घ) काकु एवं काव्यपाठ।

तृतीय अध्याय 64 - 140

'काव्यमीमांसा' में काव्यहेतु तथा कविशिक्षा

शक्ति एवम् प्रतिभा, प्रतिभा से सम्बद्ध कविभेद, व्युत्पत्ति, कविशिक्षा एवम् अभ्यास, कवि की शिष्यावस्था, विभिन्न शिष्यों का कविस्वरूप, शिष्य का कवि बनने का विकासक्रम-कवि की अवस्थाएँ, कविभेद तथा कवियों के गुण, अभ्यास के उपाय, काव्यपाक, कवियों का काव्यरचनाकाल, दिनचर्या, स्वभाव, स्वास्थ्य, स्वच्छता, परिचारकगण, सम्बन्धी तथा मित्र, सहायक

लेखक, लेखनसामग्री, आवास। विभिन्न प्रकीर्ण कविशिक्षाएँ। शिक्षा सम्बन्धी विषयों के विस्तार का कारण तथा औचित्य।

चतुर्थ अध्याय 141 - 186

कवि समय

कविसमय का सम्बन्ध शब्दों से, अर्थों से अथवा दोनों से? राजशेखर द्वारा स्वीकृत परिभाषा का तात्पर्य, कविसमय के वैशिष्ट्य-परम्परित रूप, अशास्त्रीयत्व तथा अलौकिकत्व, कविसमय में निहित सौन्दर्य भावना, कविसमय का महत्व, काव्यशास्त्र में कविसमय के विवेचन का इतिहास, विभिन्न कविसमय, विभिन्न महाकाव्यों में कविसमय का प्रयोग।

पञ्चम अध्याय 187-242

काव्य में हरण-औचित्य तथा आवश्यकता

राजशेखर के हरणविवेचन का मूल एवं हरणविवेचक पश्चाद्वर्ती आचार्य, हरण के औचित्य के सम्बन्ध में राजशेखर का अवन्तिसुन्दरी के मत से विरोध, शब्दहरण के प्रकार तथा उनकी उपादेयता, अर्थहरण विवेचन, काव्यनिर्माण में परप्रबन्धानुशीलन की अपेक्षा, आनन्दवर्धन का अर्थसाम्य— अर्थहरण विवेचन का आधार? अर्थहरण के भेद, अर्थहरण के विभिन्न अवान्तर भेदों का परस्पर तुलनीय स्वरूप, हरणकर्ता कवियों के भेद, मौलिकता।

षष्ठ अध्याय 243-271

(क) **'काव्यमीमांसा में वर्णित कवि तथा भावक**

कविविवेचन, काव्यपरीक्षक भावक विवेचन, भावक प्रकार।

(ख) **'काव्यमीमांसा' में वर्णित विदग्धगोष्ठी तथा राजचर्या**

विदग्धगोष्ठी विवेचन, राजचर्या विवेचन।

सप्तम अध्याय 272-319

काव्यमीमांसा में देश तथा कालविवेचन

देशविभाग :- लोकविभाग, समुद्र, जम्बूदीप-उसके पर्वत तथा देश, भारतवर्ष, चक्रवर्तिक्षेत्र, कुमारीद्वीप के सात कुलपर्वत, आर्यावर्त, सम्पूर्ण भारत के पाँच विभाग— पूर्वदेश, दक्षिणापथ, पश्चिमदेश, उत्तरापथ, मध्यदेश, दिशाओं की संख्या, विभिन्न दिशाओं के लोगों के वर्ण।

कालविवेचन :- कालगणना, सम्पूर्ण वर्ष में दिन-रात का बढ़ना, सौरमान, पितृमासमान तथा चान्द्रमास; चान्द्रमास से सम्बद्ध संवत्सर तथा ऋतुचक्र, विभिन्न ऋतुओं की वायु का दिशानिर्देश, ऋतुचक्र:- 'काव्यमीमांसा' तथा 'ऋतुसंहार' में वर्णित वर्षा, शरद्, हेमन्त, शिशिर, वसन्त, ग्रीष्म ऋतु वर्णन। ऋतु की अवस्थाएँ, पुष्पों की उपयोगिता, वृक्ष तथा लताओं के फूलों, फलों में समयान्तर, फूलों के प्रकार।

अष्टम अध्याय 320 - 325

उपसंहार

सन्दर्भ-ग्रन्थ-सूची 326 - 332